



## International Journal of Advance Studies and Growth Evaluation

### श्रवण अक्षम बच्चे एवं उनकी शिक्षा: एक अध्ययन

\*<sup>1</sup> डॉ. वंदना मिश्रा

\*<sup>1</sup> PDF रिसर्च स्कालर, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान केन्द्र (ICSSR), नई दिल्ली नेहरु ग्राम भारती  
(मानित विश्वविद्यालय) प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

#### Article Info.

E-ISSN: 2583-6528

Impact Factor (SJIF): 6.876

Peer Reviewed Journal

Available online:

[www.alladvancejournal.com](http://www.alladvancejournal.com)

Received: 16/Aug/2024

Accepted: 11/Sep/2024

#### सारांश:

दिव्यांग बालक ऐसे बालक होते हैं जो सामान्य बालकों से शारीरिक, मानसिक, संवेगिक आदि रूप से भिन्न होते हैं। जिससे उन्हें संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसी क्रम में श्रवण अक्षम बच्चे भी आते हैं क्योंकि इनमें सुनने की शक्ति में कमी होती है और वे सामान्य बच्चों की तुलना में कम सुनते हैं या नहीं सुन पाते हैं जिससे उन्हें दूसरों से बातचीत करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परिणामस्वरूप इनमें समायोजन की समस्या अधिक देखने को मिलती है, क्योंकि अन्य विद्यार्थियों से अपने आपको अलग महसूस करते हैं। एक श्रवण बाधित बालक या विद्यार्थी में सामाजिक गतिशीलता तीव्र गति से होती है क्योंकि उन्हें अन्य की अपेक्षा उचित वातावरण, शिक्षा आदि की सुविधा नहीं मिल पाती है और वह अपने आप को समाज से अलग-थलग समझने लगते हैं साथ ही उनके मन में कुंठा, हीनता आदि की भावना विकसित होने लगती है और धीरे-धीरे वह स्वयं को सामान्य लोगों से अलग महसूस करने लगते हैं। परिणाम स्वरूप देश का विकास भी प्रभावित होता है। अतः ऐसे बच्चे या व्यक्ति समूह को समाज से अलग होने से रोकना अतिआवश्यक है इस हेतु उनकी शिक्षा, व्यवसाय आदि में उन्हें बढ़ावा देना होगा। इसके लिए श्रवण बाधित बच्चों के विषय में पूर्ण जानकारी के साथ ही उनको उचित शिक्षा दिया जाना आवश्यक है, जिसका उल्लेख हमारी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में किया गया है। श्रवण बाधित बच्चों या विद्यार्थियों की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो उनमें कौशल विकास कर सके जिससे वे अपने दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किसी अन्य व्यक्ति जैसे परिवार, अभिभावक आदि पर आश्रित नहीं रहे और उनमें आत्मनिर्भरता का विकास हो पाएगा तथा वे अपने जीवन को अर्थ पूर्ण बनाते हुए अपना जीवनयापन आसानी से कर सकते हैं। उनके आय में वृद्धि होगी और वह समाज में एक गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करते हुए समाज की मुख्यधारा में कदम से कदम मिलाकर चल सकेंगे उनमें आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता जैसी भावना जागृत होगी साथ उनमें हीन भावना, अकर्मण्यता, नैराश्य, आत्मग्लानि जैसी मनोवैज्ञानिक भावना का अंत होगा।

\*Corresponding Author

डॉ. वंदना मिश्रा

PDF रिसर्च स्कालर, भारतीय सामाजिक  
विज्ञान अनुसंधान केन्द्र (ICSSR), नई दिल्ली  
नेहरु ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय)  
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

**मुख्य शब्द:** शब्द संक्षेप-श्रवण अक्षमता, दिव्यांगता, शिक्षा।

#### प्रस्तावना:

श्रवण अक्षम बच्चे की शिक्षा के विषय में जानने से पूर्व यह जानना अतिआवश्यक हो जाता है श्रवण अक्षमता क्या होती है, उसके क्या कारण एवं प्रभाव पड़ता है? परंतु इससे भी पूर्व यह जानना अति आवश्यक होता है की दिव्यांगता क्या होती है? दिव्यांगता, किसी भी प्रकार की कमी कमी को इंगित करता है। इसके लिए अशक्त, निःशक्तता, अपंगता, निर्योग्यता आदि शब्द का प्रयोग कि जा जाता है। दिव्यांगता किसी व्यक्ति की वह दशा है जो शारीरिक एवं मानसिक क्षति अथवा अक्षमता के कारण उत्पन्न होती है और उसकी शारीरिक व मानसिक क्रियाओं में सामान्य व्यक्ति की तुलना में बाधा

उत्पन्न होती है। भारत में दिव्यांगता की श्रेणियां 1981 की जनगणना में तीन तरह की, 2001 में 7 तरह की, 2011 में अट्ठारह तरह की निर्योग्यताओं को दिव्यांगता का आधार माना गया है। दिव्यांग जनों के अधिकार संशोधन विधेयक 2016 में दिव्यांग श्रेणियों को बढ़ाकर 21 कर दिया गया है। जिसमें दृष्टि बाधित, अल्पदृष्टि, कुष्ठरोगी, श्रवण बाधिता, चलन निःशक्तता, बौनापन, बौद्धिक निःशक्तता, मानसिक रोग, ऑटिज्म, सेलेबल पाल्सी, मांसपेशी दुर्विकार, क्रोनिक न्यूरोलॉजिकल कंडीशन, हीमोफिलिया, थैलेसीमिया, लर्निंगडिसेम्बल आदि है।

### श्रवण अक्षमता -

श्रवण अक्षमता का अर्थ सुनने में किसी प्रकार का दोष होना, चाहे वह वंशानुगत अथवा वातावरणीय कारणों से हो या कान में किसी अंग के खराबी के कारण हो। जब कोई व्यक्ति या बालक अपने कान के किसी अंग के खराबी या बीमारी आदि के कारण सामान्य रूप से सुनने वाले व्यक्तियों की आवाज को सुनने की शक्ति में अवरोध उत्पन्न होता है, उसे श्रवण दोष कहते हैं। सुनने में अधिक कमी होने के कारण भाषा, वाणी एवं संप्रेषण कौशलों के अर्जन करने में दिक्कत डालती है जिसके कारण व्यक्ति को सामान्य रूप से बातचीत करने में समस्या होती है। श्रवण आलेख के आधार पर जब शुद्ध स्वर औसत सभी आवृत्तियों में परिणाम 25 डेसीबल हियरिंग लॉस से अधिक होता है तो उसे श्रवण दोष कहते हैं।

### श्रवण अक्षमता के कारण -

श्रवण अक्षमता के मुख्य तीन कारण हैं-

1. जन्म से पूर्व (प्री-नेटल)
2. जन्म के समय (नेटल)
3. जन्म के बाद (पोस्ट नेटल)

#### 1. जन्म के पूर्व - यह स्थिति बच्चे को माँके गर्भावस्था में ही हो जाती है।

- अनुवांशिकी - यदि माता-पिता एवं अन्य वंशजों में इस प्रकार की कोई अक्षमता पहले से ही विद्यमान थी या है, तो बच्चे में भी यह अक्षमता हो सकती है।
- संक्रमण रोग - गर्भावस्था के समय माँ को यदि संक्रमण रोग जैसे मीजल्स, रूबेला, मधुमेह आदि रोग हो तो बच्चे में अक्षमता हो सकती है।
- दवाइयाँ- गर्भा वस्था में यदि माता बिना डॉक्टर की सलाह से दवाइयों का अत्यधिक सेवन करती है तो गर्भ में पल रहे शिशु पर इसका बुरा प्रभाव पड़ सकता है।
- धूम्रपान - यदि माता गर्भावस्था में धूम्रपान करती है तो यह बच्चा अक्षम हो सकता है।
- असुरक्षित गर्भपात - अप्रशिक्षित दायाँ द्वारा किया गया गर्भपात नवजात शिशु को श्रवण अक्षम बना सकता है।
- एक्स-किरण - गर्भावस्था के दौरान माता का कई बार एक्स-रे कराने से यह समस्या उत्पन्न हो सकती है।
- आर-एच फैक्टर - यदि माता एवं पिता के आर-एच धारक में विरोधाभास है तो शिशु में अक्षमता हो सकती है।
- चोट/दुर्घटना - गर्भावस्था में माता को चोट पहुँचने पर यह अक्षमता हो सकती है।
- कुपोषण - माता के संतुलित आहार में कमी होने पर भी यह अक्षमता हो सकती है।

#### 2. जन्म के समय-बच्चे के जन्म के समय निम्नविषमताओं के कारण श्रवण-अक्षमता हो सकती है-

- असमय प्रसव - 250 दिन के पूर्व यदि बच्चे का जन्म होता है तो बच्चे में यह अक्षमता हो सकती है।
- प्रसव में अधिक देर- यदि माँ के प्रसव में अधिक देरी होती है तो यह अक्षमता बच्चे में हो सकती है।
- आपरेशन द्वारा जन्म - आपरेशन से जन्म होते समय चोट इत्यादि लग जाने से बच्चे में श्रवण अक्षमता हो सकती है।
- जन्म के समय बच्चे का न रोना- यदि बच्चे जन्म के समय नहीं रोता है अथवा देर से रोता है, तो उसमें यह अक्षमता हो सकती है।
- बच्चे का वजन कम होना - यदि जन्म के समय बच्चे का वजन 2.50 किलोग्राम से कम है तो बच्चे में श्रवण अक्षमता हो सकती है।

#### 3. जन्म के बाद-बच्चे के जन्म के बाद निम्नकमियों से अक्षमता हो सकती है-

- बाह्यकान कान होना - यदि किसी बच्चे में बाहरी कान नहीं होते बच्चे में श्रवण अक्षम हो सकती है।
- बाह्यकान छोटा होना - यदि किसी बच्चे में बाह्यकान आवश्यकता से अधिक छोटा है तो भी बच्चे को सुनने में समस्या होगी।
- कान की नलिका का ना होना - यदि किसी बच्चे एक्सटर्नल ऑडिटरी कैनाल बंद हो तो उसमें श्रवण अक्षमता हो सकती है।
- बीमारियाँ-बच्चे के कान पर चोट लगने जैसे कान में थप्पड़ मारना, गिर जाना, अत्यधिक तीव्र आवाज के संपर्क में आना, गंदे पानी का कान में चले जाने के कारण संक्रमण हो जाना किसी नुकीली वस्तु के द्वारा कान के पर्दे में छेद हो जाना इत्यादि के कारण श्रवण क्षमता हो सकती है।

#### श्रवण अक्षमता से बचाव श्रवण अक्षमता से निम्नलिखित विधियों द्वारा बचाव कि या जा सकता है-

- रक्त सम्बन्धित वैवाहिक सम्बन्धों से बचना।
- प्रशिक्षित लोगो द्वारा प्रसव कराना।
- नुकीली वस्तुओं से कान न कुरेदना।
- बच्चों को कान में अवांछनीय वस्तुओं को डालने से रोकना।
- शिशु को माँ द्वारा लेट कर दूध न पिलाना।
- गन्दे पानी से बच्चे को न नहलाना।
- गर्भावस्था में माता द्वारा दवाइयों के सेवन से बचना।
- संक्रमण रोग होने पर अपने पर अथवा काम रहने पर तुरंत ई एन टी स्पेशलिस्ट को दिखाना।
- कान पर चोट लगने से बचाव करना।
- बच्चों को तीव्र आवाज से दूर रखना।
- गर्भावस्था के दौरान संतुलित आहार नियमित रूप से देना।

#### साथ ही श्रवण अक्षमता की शीघ्र पहचान के द्वारा बच्चों के श्रवण दोष के पड़ने वाले प्रभाव को कम किया जा सकता है। निम्नलिखित लक्षणों के पाए जाने पर किसी भी बच्चे में श्रवण अक्षमता क्षमता हो सकती है-

- जन्म के समय बच्चे का न रोना अथवा वजन अत्यधिक कम होना।
- बच्चे के कान में सहजता से दिखाई देने वाली कोई विकृति जैसे- बाह्यकर्ण नलिका का बन्द अथवा छोटा होना, बाह्यकर्ण नलिका की अनुपस्थिति होना।
- लगातार कान बहते रहना।
- खिलौने के आवाज की तरफ न देखना।
- अन्य हम उम्र बच्चों की तरह आवाज उत्पन्न न करना।
- शिशु को आवाज देने पर प्रतिक्रिया (हँसना, मुस्कुराना, बोलना) न करना।
- बच्चे द्वारा तेज बोलने के लिये कहना अथवा ऐसा संकेत करना।
- गलत उच्चारण करना।
- मुखाकृति देख कर बात करना व वक्ता के चेहरे पर आँख गड़ाए रखना।
- बोलते समय कुछ/अक्षरों शब्दों को हटा देना, प्रायः शान्त रहना।
- बच्चे द्वारा संकेतों का अत्यधिक प्रयोग करना।
- सुनने के लिए हथेली का कान के पीछे ले जाना।
- बोलते समय पलके बार-बार झपकाना।
- बच्चे के वाकतन्त्रों (जीभ के अग्रभाग का जुड़ा होना, होठों का फटा होना, तालू में छेद होना, दाँतों की विशेष बनावट) में दिखाई देने वाला दोष।
- निर्देशों को समझने में कठिनाई।

## श्रवण अक्षम बच्चों के जीवन स्तर पर पड़ने वाला प्रभाव -

श्रवण बाधित बच्चों या व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पहलू पर प्रभाव पड़ता है। सामान्यता जन्म से बच्चा स्वाभाविक रूप से दिन - प्रतिदिन भाषाई ज्ञान अर्जित करता रहता है जिसमें उसके तत्कालीक वातावरण, अभिभावकों का सहयोग रहता है। परंतु श्रवण अक्षम बच्चे सुनते नहीं हैं जो उनमें भाषा एवं वाणी विकास में गंभीर रूप से क्षति पहुंचाती है परिणाम स्वरूप बच्चों के संप्रेषण कौशल में कमी आती है, जो उनकी शिक्षा को भी प्रभावित करती है। छोटे बच्चों का सीखना एक सामाजिक क्रिया है जहाँ नये प्रतिदिन नए कौशलों को अपने आसपास के वातावरण और परिवार, मित्रों जैसे लोगों के द्वारा अंतर क्रिया से प्राप्त होता है। गम्भीर से अत्यधिक गम्भीर श्रवण क्षतिग्रस्त बच्चे को अधि गम से पूर्व उसे संप्रेषण ना कर पाना श्रवण बाधित बच्चा भाषा के प्रतिदिन के स्वाभावित आदान से वंचित रहता है जो प्रत्येक सुन सकने वाला बच्चा घर में अपनी माता एवं तात्कालिक वातावरण से प्राप्त करता है जिसके कारण श्रवण बाधित बच्चों में भाषा एवं वाणी के विकास में गंभीर रूप से क्षति पहुंचती है। सामान्यतः प्रोफाउंड बच्चे की सोचने की क्षमता भी स्थिर होती है। यह सब कुछ देखता है और कुछ चीजों को समझता है। वह स्वयं क्योंकि सुन नहीं सकता अतः यह उन शब्दों को नहीं सीख पाता जो इनका प्रतिनिधित्व करते हैं। यह भी नहीं सीख सकता कि वाक्य किस प्रकार बनाये जाते हैं ताकि पूर्ण रूप से विचारों को अभिव्यक्त किया जा सके। वह स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिये संकेतों का प्रयोग करता है किन्तु दूसरे उसे हमेशा समझ नहीं पाते दूसरों द्वारा भी व्यक्त सामान्य निर्देश से बाहर के संकेत या चेष्टाये को स्पष्ट रूप से समझ नहीं पाते। इसके परिणाम स्वरूप उसका ज्ञान भी अशक्त रह जाता है। श्रवण दोष से ग्रसित बच्चे में भाषाई मंदता के कारण उसके विकास के विभिन्न क्षेत्रों पर गंभीर रूप से प्रभाव पड़ता है। क्योंकि विकास का प्रत्येक क्षेत्र परस्पर एक दूसरे पर निर्भर करता है अर्थात एक क्षेत्र में प्रगति या कमी अनिवार्य रूप से अन्य क्षेत्रों को भी प्रभावित करती है। शैक्षणिक पहलू- श्रवण बाधिता स्वयं को सीखने की बौद्धिक क्षमता को प्रभावित नहीं करती, किन्तु श्रवण बाधित बच्चे की सामान्य पर्याप्त शिक्षा के लिये विशेष प्रकार के स्कूल में पढ़ाई और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। चूंकि स्कूल में बच्चे की शिक्षा पूर्ण रूप बच्चे के भाषा अधिकार तथा सुनने की क्षमता आदि उस पर निर्भर करती है, तो उसकी सुनने की अक्षमता उसके बौद्धिक विकास और शैक्षणिक विकास को अवरुद्ध करता है। सामाजिक पहलू-भाषा की अज्ञानता और अभिव्यक्ति की कमी श्रवण बाधित बच्चे मानसिक रूप से बहुत अलगाव महसूस करता है। वे प्रत्येक व्यक्ति और वस्तु को संदिग्धता से देखता है और उनमें सामाजिक स्थिति से अलग होने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है।

मनोवैज्ञानिक पहलू-विभिन्न कारक जैसे घर का वातावरण, जन्मजात क्षमता, भावात्मक अस्थिरता आदि के कारण बच्चे के व्यवहार में कुसमायोजन उत्पन्न हो जाता है। जिससे न केवल अक्षम बालक स्वयं, बल्कि उसका परिवार और उसके आस-पास का परिवेश भी प्रभावित होता है। श्रवण क्षतिग्रस्तता के प्राथमिक और द्वितीयक प्रभाव - डानियल लिंग के शब्दों में श्रवण क्षतिग्रस्तता यदि अत्यधिक गंभीर होती है तो मनुष्य में असंख्य प्राथमिक और द्वितीय प्रभाव पड़ते हैं। इसकी प्राथमिक प्रभाव है ग्रहण करने की क्षमताओं में रुकावट एवं संप्रेषण में भाषा के प्रयोग में कमी। इसके द्वितीयक प्रभाव अधिक विस्तृत है और (विशेष रूप से पुनर्वास के अनुपयुक्त उपाय होने के कारण) इसमें सम्प्रेषण में कमी शामिल है जो अनुभव को सीमित करता है।

वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास को अवरुद्ध करता है तथा अधिकतम शैक्षणिक अर्जन को रोकता है। प्रतिकूल प्रभावों का तीसरा स्तर तब पाया जाता है जब बच्चा स्कूल छोड़ता है। खराब शैक्षणिक अर्जन रोजगार विकल्पों को प्रतिबंधित करता है। आय ही

सीमित नहीं होते बल्कि ऐसे व्यक्ति परिवार को भी बड़े पैमाने पर प्रभावित करते हैं।

## श्रवण अक्षम बच्चों हेतु शिक्षा-

श्रवण बाधित बच्चों की भाषा एवं वाणी का प्रभाव उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर पड़ता है। विकास का सभी पहलू आपस में एक दूसरे से सम्बन्धित होते हैं। क्योंकि श्रवण बाधित बालक सुन नहीं सकता है अतः वह उन शब्दों को नहीं सीख पाता जो दैनिक जीवन हेतु अति आवश्यक है। वह प्रत्येक चीज देखता व समझता है परन्तु भाषायी रूप से अभिव्यक्त नहीं कर पाता है। वह यह भी नहीं सीख पाता कि वाक्य किस प्रकार से बनाये जाते हैं जिससे कि वह पूर्ण रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकें। श्रवण दोष से ग्रसित बालक स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए संकेतों का प्रयोग करता है किन्तु दूसरे उसे हमेशा समझ नहीं पाते तथा दूसरों के द्वारा भी व्यक्त सामान्य निर्देश से बाहर के संकेत को स्पष्ट रूप से श्रवण बाधित व्यक्ति नहीं समझ पाता श्रवण दोष से ग्रसित बच्चों/विद्यार्थियों की शिक्षा को निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है।

## सम्प्रेषण तकनीकी

- साइन भाषा
- लिपरीडिंग (ओष्ठ पठन)
- संकेत वाणी (क्यूड स्पीच)
- गतिविधि (मूवमेंट विधि)
- एम्प्लीफायर का उपयोग

श्रवण दोष से ग्रसित बालक क्योंकि सुन नहीं सकता है अतः कक्षा-कक्ष में पढ़ाई गयी चीजों को यह समझ नहीं पाता है। जिससे वह पढ़ाई गयी विषय वस्तु को पूरी तरह से सीख नहीं पाता। श्रवण दोष से ग्रसित बालक में सम्प्रेषण की सबसे बड़ी समस्या आती है।

अतः ऐसे बच्चों को शिक्षित करने हेतु कुछ विशेष सम्प्रेषण तकनीकी का प्रयोग किया जाता है जैसे शिक्षक पढ़ाते समय साइन लैंग्वेज के प्रयोग साथ-साथ बच्चों की तरफ मँहु करके पढ़ाता है जिससे श्रवण बाधित बच्चे लिप रीडिंग करके विषय वस्तु को समझते हैं। साथ ही शिक्षक ऐसे बच्चों को श्रवण यंत्र पहनाये रहता है जिससे बच्चों को कुछ हद तक आवाज सुनाई देती है।

## शिक्षण तकनीकी

- शिक्षक श्रवणदोष से ग्रसित विद्यार्थियों को पढ़ाने हेतु निम्न तरह की तकनीकी अपनाता है-
- शिक्षक द्वारा पढ़ाते समय शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग किया जाता है जैसे
- मॉडल विभिन्न आकृति वाले को बताने हेतु खाये मानचित्र ग्लोब चित्र आदि।
- ऐसे बच्चों को पढ़ाने हेतु एक विशेष शिक्षक की नियुक्ति होती है।
- ग्रुप हियरिंग एड आदि का प्रयोग किया जाता है।
- सीखने में कहाँ हो रही है इसकी ओर ध्यान रख कर आई०सी०टी० का प्रयोग भी किया जाता है।
- शिक्षण कार्य कराते समय बीच-बीच में प्रश्न पूछते हैं जिससे कि यह पता चल सके भी कि बच्चों को कितना समझ में आ रहा है।
- श्रवण अक्षम बच्चों को अलग अलग माहौल में अलग-अलग प्रकार की ध्वनियों से अवगत कराना चाहिए जिससे ध्वनियों में विभेद कर सके।
- श्रवण अक्षम बालकों को पढ़ाते समय यह विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए कि पाठ योजना को पढ़ाने के लिए अधिक से अधिक चित्रों और मॉडलों का प्रयोग किया जाए, जिससे बालक प्राकृतिक रूप से सीख सकें।



साथ ही सामान्य बच्चों की तरह श्रवण अक्षम बच्चों को भी शिक्षा एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए और व्यवसाय प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात इन बच्चों का विशेष रोजगार कार्यालय में पंजीकरण होना चाहिए। भारत सरकार द्वारा इन्हें रोजगार में आरक्षण देकर रोजगार उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

### बाधित बच्चों के लिए अध्यापक का दायित्व

- श्रवण प्रशिक्षण देना
- वाणी प्रशिक्षण देना।
- पढ़ना सस्वर
- वाणी-वाचन।
- शब्दकोष में वृद्धि।
- भाषाई ज्ञान में वृद्धि।

### शिक्षण के समय अध्यापक की भूमिका-पढ़ाते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए-

- शिक्षण के समय किसी खाद्य-पदार्थ का सेवन न करें, क्योंकि इससे बच्चे वाणीवाचन से वंचित रह जाते हैं।
- बच्चों की तरह मुँह करके बोले श्यामपट पर लिखते समय शान्त रहे लिखने के उपरान्त ही उसे धीमी गति से दोहराये।
- बच्चों को श्रवण यंत्र प्रयोग करनेके लिए प्रतिदिन प्रोत्साहित करें। यह सुनिश्चित करे कि श्रवण यंत्र ठीक प्रकार से कार्य कर रहा है अथवा नहीं।
- इनका अन्य बच्चों से परिचय कराये तथा उचित सामंजस्य स्थापित करें।
- अधिकाधिक चित्रो दृश्य-श्रव्य सामग्रियों तथा लिखित सामग्रियों का प्रयोग करें।
- शिक्षण के नये शब्दों को दोहराये तथा श्यामपट पर भी लिखें।
- बच्चे को एक बार में एक ही भाषा का ज्ञान है।
- बच्चेके सामने स्पष्ट व धीमी गति सेबोले।

श्रवण अक्षम बच्चों के लिए विशेष शिक्षा, श्रवण बाधिता में प्रशिक्षित विशेष शिक्षक द्वारा दिया जाना चाहिए। बच्चों का एक विशेष पाठ्यक्रम बनाया जाता है। यह उनके स्तर पर निर्भर करता है। सर्वप्रथम विशेष शिक्षक पढ़ाते समय सामान्य चिन्हों एवं संकेतों का अधिकतर प्रयोग करते थे जिससे बच्चे की भाषा का विकास अवरोधित हो जाता था। इसलिए सांकेतिक चिन्हों अथवा हस्तचालित पद्धति को दूर किया जा रहा है। बच्चों को काफी अधिक मात्रा में आकर्षक पुस्तकों के सम्पर्क में लाया जाना चाहिए ताकि वे खाली समय में पढ़ने के लिए निर्धारित विशिष्ट स्थान में बैठकर उनका अवलोकन कर सकें। कभी-कभी हो सकता है ये केवल रंगीन चित्रों को ही देखें या स्वयं बिना किसी मदद के अथवा अध्यापक की सहायता से उन्हें पढ़ भी सकते हैं। अध्यापक को चाहिए कि वे बच्चों के लिए विविध प्रकार की पढ़ने योग्य पुस्तकों को उपलब्ध कराये। जहाँ भी आवश्यक हो अध्यापक द्वारा बच्चों की निगरानी एवं सहायता करनी चाहिए और पढ़ाते समय पाये जाने वाले नये शब्दों और संकल्पनाओं को समझाना चाहिए। इस प्रकार दिये गये पढ़ने सम्बन्धी अनुभवों के सहारे बच्चे प्राथमिकस्तर पर पढ़ने के लिए तैयार हो जायेंगे। पढ़नेके लिए छात्रों को विभिन्न प्रकार की पठन सामग्री दी जानी चाहिए। उन्हें समाचार पत्र में प्रकाशित विभिन्न विषयों, पाठ्यक्रमों में सम्मिलित विभिन्न विषयों में पाठ्य पुस्तकों में दी गयी सूचनाओं, कहानियों, अभ्यास पुस्तिकाओं के सम्पर्क में लाया जाना चाहिए। इस स्तर पर कहानियों की लम्बाई पिछले स्तर के मुकाबले अधिक हो जाती है जिससे बच्चे संचित वैचारिक इकाइयों को पढ़ना और समझना सीखें घटनाओं के क्रमशः वर्णन के साथ-साथ बच्चे कहानी के क्रमिक रूप से समझ सकें। कहानी के बाद परीक्षणों की एक श्रृंखला होनी चाहिए जो उनमें मुख्य आशय की

समझ, घटनाओं का क्रम, शब्दावली तथा निष्कर्ष आदि की जाँच कर सके। इन गति विधियों के बाद विभिन्न प्रकार के अभ्यास दिये जाने चाहिए, जैसे कहानी का बेहतर शीर्षक क्या हो सकता है? समझाइये, साधारण प्रश्नों का उत्तर देना वाक्यों को सही क्रम लगाना इत्यादि।

### उपसंहार-

इस प्रकार श्रवण अक्षम बच्चों की पहचान कर, निदान करते हुए उसकी क्षमताओं, योग्यताओं, रुचियों व अभिरूचियों के अनुसार उनकी शिक्षा हेतुवि शेष शिक्षा सामग्री, विशेष पाठ्यक्रम, प्रशिक्षित अध्यापकों के द्वारा प्रशिक्षण कराकर उसके प्रत्येक पक्ष जैसे-शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक, सामाजिक, व्यासायिक आदिका विकास करते हुए उसे आत्मनिर्भर एवं आत्मविश्वासी बनाने के साथ-साथ समाज के साथ समायोजन करने में सहायता प्रदान करना है जिसे बच्चे का सर्वांगीण विकास हो सके और यह राष्ट्र तथा समाज में एक अच्छा नागरिक होने के उत्तरदायित्व को पूर्ण कर सके। इस कार्य हेतु सरकार द्वारा विभिन्न नीतियों, योजनाएँ एवं अनेकों प्रकार के प्रावधान किये गये हैं। जिसके उपयोग या लाभ से विशिष्ट बालक श्रवण अक्षम बच्चे समाज की मुख्य धारा से जुड़ सके।

### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जोसेफ आर ए (2009), विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास, समाकलन पब्लिशर्स, वि लांग समाकलन संस्थान, करौंदी, वाराणसी।
2. सिंह अरुण कुमार (2001), उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोती लाल बनारसी दास दिल्ली
3. के ० ऐलीम सेलन (1992), द एक्सेप्शनल चाइल्ड मेनस्ट्रीमिंग इन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन, सेकेन्ड एडिशन, डम्पर पब्लिशर्स इक न्यूयार्क।
4. चौरसिया बीबी (2003), हयूमन एनॉलमी रीजनल एण्ड एप्लाइड-हेड, नेक एण्ड ब्रेन थर्ड एडिशन वाल्यूम-3 सीबीएस पब्लिशर्स एण्डडिस्ट्रीब्यूटर, नई दिल्ली।
5. रेसुरजना (2001), विकलांग बच्चों हेतु समेकित शिक्षा-शिक्षक मार्गदर्शिका, मध्य प्रदेश राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, भोपाल।
6. बी एड, विशिष्ट शिक्षा-श्रवण बाधितों का परिदृश्य इतिहास एवं वर्तमान स्थिति उत्तर प्रदेश राजर्षिटंडन मुक्त विश्वविद्यालय-कुमार नरेश (2001), राष्ट्रीय शिक्षा, विक्रम प्रकाशन, कृष्णा नगर दिल्ली।
7. सारस्वत मालती (2006) शिक्षा मनोविज्ञान की रूप रेखा, आलोक प्रकाशन, अमीनाबाद, लखनऊ।
8. [www.wikipedia.com](http://www.wikipedia.com)
9. [www.google.com](http://www.google.com)
10. [www.sodhganga.com](http://www.sodhganga.com)
11. [www.educationforequity.com](http://www.educationforequity.com)